शेख़ फ़रीद - सबद ५

जितु दिहाड़ै धन वरी साहे लए लिखाइ ॥

सलोक, सेख फरीद, गुरु ग्रंथ साहिब, १३७७

जितु दिहाड़ै धन वरी साहे लए लिखाइ ॥
मलकु जि कंनी सुणीदा मुहु देखाले आइ ॥
जिंदु निमाणी कढीऐ हडा कू कड़काइ ॥
साहे लिखे न चलनी जिंदू कूं समझाइ ॥
जिंदु वहुटी मरणु वरु लै जासी परणाइ ॥
आपण हथी जोलि कै कै गलि लगै धाइ ॥
वालहु निकी पुरसलात कंनी न सुणी आइ ॥
फरीदा किड़ी पवंदीई खड़ा न आपु मुहाइ ॥१॥

सार: जीवन का अंत पूर्वनिर्धारित है, यह मृत्यु की अनिवार्यता है। यह गहन और शाश्वत रहस्य अंतिम समानता को दर्शाता है, जो किसी के प्रति पक्षपात नहीं करता और सभी जीवों में समानता रखता है। यह हमें जीवन की क्षणिकता को स्वीकार करने के लिए प्रेरित करता है। जबकि इस अस्थायित्व को अपनाना कठिन हो सकता है, यह हमें प्रत्येक क्षण की कद्र करने और अपने प्रयासों में उद्देश्य खोजने का भी साहस देता है।

जितु दिहाड़ै धन वरी साहे लए लिखाइ ॥
विवाह के शुभ अवसर की तिथि और समय पहले से तय होता है जिसका अर्थ है कि जन्म और मृत्यु का दिन और समय भी पूर्वनिर्धारित है।

मलकु जि कंनी सुणीदा मुहु देखाले आइ ॥
मालिक, उस सर्वव्यापी ऊर्जा का प्रतिनिधित्व करते हैं जो सृजन, पोषण और विनाश करती है। जिसके बारे में हमने केवल सुना है जिसने स्वयं को प्रकट कर नश्वरता की वास्तविकता का अनुभव करने का संदर्भ दिया है।

जिंदु निमाणी कढीऐ हडा कू कड़काइ ॥
जब शरीर नष्ट हो जाता है तब आत्मा को मुक्ति मिलती है। यह हमारे अस्थायी भौतिक अस्तित्व से हमारे लगाव को उजागर करता है।

साहे लिखे न चलनी जिंदू कूं समझाइ ॥
जीवन का अंत पूर्वनिर्धारित है, जो मृत्यु की अनिवार्यता की वास्तविकता को उजागर करता है।

जिंदु वहुटी मरणु वरु लै जासी परणाइ ॥
चेतना दुल्हन है और मृत्यु दूल्हा है जो उसे विवाह करके ले जाएगा। यह दर्शाता है कि जब क्षणिक भौतिक अस्तित्व समाप्त होता है तब हमारी जागरूकता शाश्वत ऊर्जा के साथ एक हो जाती है।

आपण हथी जोलि कै कै गलि लगै धाइ ॥
मृत्यु ने शरीर को आराम दिया है अब यह किसी को थामने के लिए कैसे आगे बढ़ेगा? यह हमारे भौतिक शरीर की नश्वरता दिखाती है।

वालहु निकी पुरसलात कंनी न सुणी आइ ॥
क्या आपने नरक से स्वर्ग तक जाने वाले पुल की छवि के बारे में नहीं सुना है जिसे बाल से भी संकरा कहा जाता है? यह कल्पना इस बात का प्रतीक है कि अवगुण-सदगुण के बीच के नाज़ुक संतुलन पर ध्यान भटकना आसान है।

फरीदा किड़ी पवंदीई खड़ा न आपु मुहाइ ॥१॥

फरीद कहते हैं कि चेतावनी की पुकारें बज रही हैं, अब सावधान रहें - खुद को लुटने न दें। प्रतीकात्मक रूप से, जैसे-जैसे समय बीतता है और मृत्यु निकट आती है आध्यात्मिक मार्ग पर चलना और इस जीवन का अधिकतम लाभ उठाना आवश्यक है। (१)

तत्त्व: शेख़ फ़रीद कहते हैं कि जैसे-जैसे समय बीतता है और मृत्यु निकट आती है, यह फायदेमंद होता है कि हमारे कार्य सद्गुणों के अनुसार हों ताकि हम एक संतोषजनक जीवन जी सकें। हमारे अच्छे कर्म ही वास्तविक मूल्य की संपत्ति हैं जो हमारे अस्तित्व के महत्व को परिभाषित करते हैं।

पहलकदमी

Oneness In Diversity Research Foundation

वेबसाइट: OnenessInDiversity.com

ईमेल: onenessindiversityfoundation@gmail.com